इकाई 9 : राजनीतिक भूगोल में प्राकृतिक तत्व (Physical Elements in Political Geography!)

इकाई' की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 स्थिति

9.3 विस्तार

9.4 आकार

9.5 जलवायु

9.6 धरातल

9.7 सागर एवं महासागर

9.7.1 क्षेत्रीय सागर परिकल्पना

9.7.2 आर्थिक क्षेत्र सम्बन्धी परिकल्पना

9.8 सारांश

9.9 शब्दावली

9.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

9.11 बोध प्रश्नों के उतर

9.12 अभ्यासार्थ प्रश्न

9.0 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त आप समझ सकेंगे :

- स्थिति (Location) किस प्रकार एक राज्य अथवा राजनीतिक इकाई को प्रभावित करती है ।
- क्षेत्रीय विस्तार, किसी राज्य के विकास एवं शक्ति को कैसे प्रभावित करता है ।
- किसी राज्य के आकार का प्रभाव वहाँ की सुरक्षा, प्रशासन एवं यातायात पर कैसे पड़ता है ।
- जलवायु का मानव जीवन के विविध पक्षों एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ राज्य की राजनीतिक व्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ता है ।
- धरातल किस प्रकार राज्य के आर्थिक और सांस्कृतिक स्वरूप को प्रभावित करता है तथा राज्य की सीमा निर्धारित करता है ।
- सागर एवं महासागर राज्य को ' कैसे प्रभावित करते है

9.1 प्रस्तावना (Introduction)

किसी भी प्रदेश अथवा राज्य के राजनीतिक–भौगोलिक स्वरूप को समझने के लिए वहाँ के प्राकृतिक तत्वों का अध्ययन अनिवार्य है । प्रत्येक तत्व का राज्य के विकास एवं शक्ति पर एकाकी एवं सामूहिक प्रभाव पड़ता है । प्रस्तुत इकाई में प्रमुख प्राकृतिक तत्वों का अध्ययन किया गया है । इस इकाई के खण्ड 9.2 में राज्य की भौगोलिक स्थिति का वर्णन किया गया है जो निरन्तर एक राजनीतिक इकाई को प्रभावित. करती रहती है । खण्ड 9.3 में राज्य के क्षेत्रीय विस्तार का वर्णन किया गया है जो राज्य के विकास एवं शक्ति को अत्यधिक प्रभावित करता है । इसी इकाई के खण्ड 9.4 में राज्य के आकार का अध्ययन किया गया है कि यह किस प्रकार राज्य की सुरक्षा, प्रशासन व यातायात को प्रभावित करता है । जलवायु का प्रभाव मानव जीवन के विविध पक्षों, यथा–भोजन, वस्त्र, गृह निर्माण, कृषि उत्पादन, कार्य क्षमता एवं विविध सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ–साथ राज्य की राजनीतिक व्यवस्था विशेषकर शक्ति पर पड़ता है । इसका वर्णन खण्ड 9.5 में किया गया है । धरातल का राज्य पर प्रभाव का विवेचन खण्ड 9.6 में किया गया है । राज्यों के लिए सागरों एवं महासागरों के महत्व का अध्ययन खण्ड 9.7 में किया गया है । इसी खण्ड में क्षेत्रीय सागर परिकल्पना एवं आर्थिक क्षेत्र सम्बन्धी परिकल्पना का वर्णन किया गया है । खण्ड 9.8 में इस इकाई का सारांश दिया गया है । इकाई के अन्त में शब्दावली, संदर्भ ग्रन्थ, बोध प्रश्नों के उतर एवं अभ्यासार्थ प्रश्न दिए गए हैं ।

9.2 स्थिति (Location)

स्थिति एक महत्वपूर्ण भौगोलिक तथ्य है जो निरन्तर एक राज्य अथवा राजनीतिक इकाई को प्रभावित करता रहता है । जैसा कि कहा गया है कि स्थिति में स्थायित्व होता है, किन्तु समय के साथ उसका सापेक्षिक अथवा राजनीतिक महत्व परिवर्तित होता जाता है । जैसे संयुक्त राज्य एक समय विश्व का अन्तिम छोर था, किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में यह विश्व की क्रियाओं का केन्द्र बन गया । भूगोलवेता इस प्रकार के सापेक्षिक महत्व को स्पष्ट करता है । भौगोलिक स्थिति तीन प्रकार से व्यक्त की जाती है:

1 अक्षांश एवं देशान्तर रेखाओं के संदर्भ में स्थिति,

2 जल एवं स्थल के संदर्भ में स्थिति, एवं

3 निकटवर्ती देशों के संदर्भ में स्थिति ।

1 अक्षांश एवं देशान्तर रेखाओं के सन्दर्भ में स्थिति

सम्पूर्ण विश्व अक्षांश एवं देशान्तर रेखाओं से आवृत है । अत: सर्वप्रथम स्थिति प्रदर्शित करने के लिए अक्षांश एवं देशान्तर की सहायता ली जाती है । इनके द्वारा वर्णित स्थिति से तुरन्त ही विश्व मानचित्र पर किसी स्थान की स्थिति ज्ञात हो जाती है ।

इस प्रकार स्थिति प्रकट करने से उस स्थान अथवा राज्य की गोलार्द्धों में स्थिति ज्ञात हो जाती है, साथ ही साथ जलवायु एवं समय निर्धारण में भी सहायता मिलती है । प्राथमिक विचारकों ने राज्य की शक्ति, मानव क्षमता, आदि का स्थिति से सम्बन्ध व्यक्त किया है । जैसे बोदिन (Bodin) के अनुसार 'उतरी क्षेत्रों के मनुष्य शारीरिक शक्ति सम्पन्न एवं दक्षिणी क्षेत्रों के तकनीकी ज्ञान में एवं अध्यव्यवसायी तथा मध्यवर्ती क्षेत्रो के मनुष्य राजनीति के नियंत्रण के लिए श्रेष्ठ होते है । ' यह तथ्य पूर्ण सत्य है कि उष्ण जलवायु एवं ध्रुवीय जलवायु मानव विकास एवं क्षमता के लिए उपयुक्त नहीं होती तथा मध्य अक्षांशीय या शीतोष्ण जलवायु सर्वोतम होती है । अत: कहा जा सकता है कि स्थिति जलवायु को नियंत्रित करती है तथा जलवायु अन्य आर्थिक एवं मानवीय क्रियाओं को ।

2 **जल एवं स्थल के सन्दर्भ में स्थिति**

समुद्र एवं स्थल से सम्बन्धित स्थिति राज्य के आर्थिक एवं राजनीतिक स्वरूप को अत्यधिक प्रभावित करती है । वे राज्य जिनका सम्बन्ध समुद्र से है या समुद्र से घिरे हुए हैं उनको सामुद्रिक कहा जाता है । इसके विपरीत वे राज्य जिनका समुद्र से सम्बन्ध नहीं है वे स्थलीय' या महाद्वीपीय' कहलाते हैं । इस तथ्य को सामान्यतया. स्थलीय सीमा की एवं जलीय सीमा की लम्बाई के अनुपात द्वारा स्पष्ट किया जाता है। सामुद्रिक सीमाओं के विविध स्वरूप निम्न प्रकार के होते हैं:

(i) **एक सागरीय स्थिति** – जिन देशों का तट एक सागर अथवा महासागर से सम्बन्धित होता है उनकी एक सागरीय स्थिति होती है । अफ्रीका एवं दक्षिणी अमेरिका में इस प्रकार की स्थिति वाले देश अधिक हैं । ब्राजील जैसा विशाल आकार वाला देश की एक सागरीय स्थिति रखता है । यूरोप में अनेक सागर होने के कारण केवल बेल्जियम नीदरलैण्ड, अल्बानिया रूमानिया, यूगोस्लाविया और बुल्गारिया ही एक सागरीय स्थिति रखते हैं । एशिया महाद्वीप के थाइलैण्ड, म्यान्मार, ईरान, पाकिस्तान, बांग्लादेश एक सागरीय स्थिति वाले हैं ।

(ii) **द्वै–सागरीय स्थिति** – यह स्थिति अनेक स्वरूपों में दृष्टिगोचर होती है । प्रथम– प्रायद्वीप स्थिति जैसे कि इटली, स्पेन, ग्रीस, भारत आदि की है, द्वितीय– दो प्रमुख सागरों अथवा महासागरों के मिलन स्थल पर, जैसे– चिली, मिश्र, मोरक्को, नार्वे, दक्षिणी अफ्रीका आदि एवं तृतीय – एक राज्य के पृथक पृथक स्थिति होने के कारण । इसका उदाहरण बांग्लादेश बनने से पहले पाकिस्तान था ।

(iii) **तीन सागरीय स्थिति** – तीन ओर से समुद्र से घिरे देशों की संख्या अपेक्षाकृत कम है । इस श्रेणी में संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, फ्रान्स, टर्की सम्मिलित किए जाते हैं ।

(iv) **बहुसागरीय और द्वीपीय स्थिति** – बहुसागरीय स्थिति सोवियत संघ की है किन्तु इसका विस्तार इतना अधिक है कि सागरीय प्रभाव बहुत कम है तथा महाद्वीपीयता अधिक है । इसी प्रकार आस्ट्रेलिया चारों तरफ से जल से घिरा हुआ है

फिर भी महाद्वीप है, द्वीप नहीं क्योंकि सामुद्रिक प्रभाव अति–सीमित है । द्वीपीय स्थिति में सामुद्रिक प्रभाव अधिकतम होता है जैसा कि ग्रेट ब्रिटेन, जापान आदि की स्थिति से स्पष्ट होता है ।

महाद्वीपीय स्थिति – इस प्रकार की स्थिति से तात्पर्य ऐसे राज्यों से है जिनका सागरीय तट से कोई सम्बन्ध न हो । इसी कारण ऐसी स्थिति को 'स्थल–आवृत स्थिति' (Landlocked Location) एवं 'आन्तरिक स्थिति (Interior Location) भी कहते हैं । इस प्रकार की स्थिति वाले राज्यों का सागर से सम्पर्क नहीं हो पाता है जिसके अभाव में राज्य का व्यापार कुण्ठित हो जाता है । बोलिनिया पेराग्वे, स्विटजरलैण्ड, चैकोस्लोवाकिया, नेपाल, अफगानिस्तान आदि इसी प्रकार के राज्य हैं ।

3 **निकटवर्ती देशों के संदर्भ में स्थिति**

इस प्रकार की स्थिति में राज्य के समीप स्थित देशों की संख्या एवं प्रकार का वर्णन किया जाता है, अर्थात् पड़ौसी देश शक्तिशाली है अथवा कमजोर, अधिक जनसंख्या वाले हैं या कम जनसंख्या के, विकसित हैं या अविकसित आदि । वास्तव में इससे राज्य की सापेक्षिक स्थिति का ज्ञान होता है । सापेक्षिक स्थिति का राज्य की रक्षा पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता हे । यदि पड़ौसी राज्यों के सम्बन्ध मित्रतापूर्ण हैं तो आपसी सहयोग एवं विकास होगा । यदि यह' सम्बन्ध शत्रुतापूर्ण है तो सदैव आक्रमण का भय होगा । प्रथम श्रेणी में संयुक्त राज्य और कनाडा को रखा जा सकता है तथा द्वितीय श्रेणी में भारत–पाकिस्तान एवं भारत–चीन के सम्बन्धों को । सापेक्षिक स्थिति में केन्द्रीय स्थिति, सीमान्त स्थिति, श्रेणीबद्ध स्थिति, विच्छिन्न स्थिति, व्यापारिक मार्गो के सन्दर्भ में तथा विकास के स्तर के आधार पर भी विवेचन किया जाता है ।

स्थिति से सम्बन्धित दो प्रकार के राज्य और होते है । ये हैं– अन्तस्थ राज्य Buffer state) एवं सामरिक स्थिति (Strategic Location) ।

अन्तस्थ राज्य (Buffer State) – स्पाइकमेन के अनुसार, दो बड़े देशों के मध्य स्थित छोटी राजनीतिक इकाई को 'अन्तस्थ राज्य' कहते हैं । इस प्रकार के राज्य अपना अस्तित्व इसलिए बनाए रखते है कि वे दो शक्तिशाली पड़ोसियों को पृथक करते हैं । वास्तव में ये क्षेत्र 'संक्रान्ति क्षेत्र' होते है, जहाँ दोनों राज्यों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विचारधाराओं का सम्मिश्रण देखा जा सकता है । इस प्रकार के राज्यों का अस्तित्व विश्व इतिहास में पर्याप्त मिलता है । ईरान, अफगानिस्तान तथा स्याम 20वी शताब्दी के आरम्भ के उदाहरण हैं । तीनों ही देश ब्रिटेन तथा सोवियत संघ और ब्रिटेन तथा फ्रांस की शक्तियों को पृथक करते थे । यदि अन्तस्थ राज्य स्वयं की रक्षा करने में सफल हो जाता है तो उसका अन्तस्थ स्वरूप समाप्त हो जाता है । स्विट्जरलैण्ड अपनी प्राकृतिक सीमाओं में स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखने में सफल हुआ, अत: इसे अन्तस्थ राज्य नहीं कहा जा सकता है ।

अन्तस्थ राज्य मात्र स्थिति का ही परिणाम नहीं है, अपितु उनकी स्वतंत्रता बनाए रखने की प्रवृति का भी इसमें योग होता है । अन्तस्थ राज्य के लिए आवश्यक नहीं है कि वह स्थल आवृत ही हो । थाईलैण्ड, फिनलैण्ड, ईरान, सागरीय सीमा वाले अन्तस्थ –राज्य हैं ।

सामरिक स्थिति (Strategic Location) – इस प्रकार की स्थिति का सम्बन्ध देश की सुरक्षा से होता है । ये वे स्थल होते हैं जिनको आधार मानकर आक्रमण किया जाता है । सामरिक स्थिति राजनीतिक शक्ति संतुलन एवं तकनीकी विकास के साथ परिवर्तित होती रहती है । वायु यातायात के विकास के साथ ही वर्तमान काल में सामरिक दृष्टि से आर्कटिक महासागर सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो गया है । पहले यह हिम मण्डित महासागर के रूप में महत्वहीन क्षेत्र समझा जाता था ।

स्थल आवृत राज्य एवं समुद्री सुविधा

(The Landlocked State and Access to the Sea)

राज्यों की स्थिति के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण तथ्य स्थल आवृत राज्यों की सागरीय सुविधा प्रदान करना है, क्योंकि वर्तमान काल में प्रत्येक राज्य व्यापारिक सम्बन्धों के लिए सागरीय मार्गो पर निर्भर है तथा राज्य का सागर से सम्पर्क न होना राज्य की प्रगति के लिए बाधक है । वर्तमान में विश्व के 26 स्थल आवृत देश हैं ।

सभी स्थल आवृत राज्यों की प्रधान समस्या सामूहिक सुविधा प्राप्त करना है । वे जहाजी व्यापार की सुविधा की अपेक्षा करते हैं जो सामान्यतया विश्व के अधिकांश देशों को उपलब्ध है । वर्तमान स्थल आवृत राज्यों को सागर प्रदेश की सुविधा अन्य किसी तथ्य की अपेक्षा आपसी समन्वय एवं समझौते पर अधिक निर्भर है । यद्यपि इसके लिए सन् 1921, 1958 और 1964 में सम्मेलन हो चुके हैं ।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि स्थिति एक प्रमुख एवं प्रभावशाली भौगोलिक तत्व है । यह राज्य के विकास एवं राजनीतिक गतिविधियों को न केवल नियंत्रित करता है, अपितु निर्धारित करता है । स्थिति का प्रभाव प्रमुखत: राज्य की सुरक्षा एवं सामरिकता जलवायु, परिवहन, विदेशी सम्बन्ध आदि पर पड़ता है । अत: स्पष्ट है कि स्थिति एक सतत् प्रभावशाली तत्व है जो राजनीतिक गतिविधियों को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से परिचालित करता है । विश्व सामरिकता सम्बन्धी विद्वानों के विचार अर्थात् मैकिण्डर, स्पाइकमेन, मेनिंग, होसोन, डी–सेरवेस्की आदि स्थिति के महत्व को ही स्पष्ट करते हैं ।

9.3 विस्तार (Size)

किसी राज्य के क्षेत्रीय विस्तार का उसके विकास एवं शक्ति पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है । पर्याप्त विस्तार के अभाव में राज्य की प्रगति कुंठित हो जाती है । विस्तार के साथ सांस्कृतिक उपलब्धियाँ भी राज्य के विकास को प्रभावित करती हैं । जैसे सन् 1500 में स्विटजरलैण्ड तथा 17 वी शताब्दी में डच गणतन्त्र की विश्व में महता थी, यद्यपि ये दोनों ही छोटे देश रहे हैं । दूसरी ओर अनेक राज्य अधिक क्षेत्रीय

विस्तार होते हुए भी अन्य कठिनाइयों के कारण न शक्तिशाली हो सके और न ही अधिक जनसंख्या वाले । उदाहरण के लिए आस्ट्रेलिया विशाल क्षेत्र रखते हुए भी विश्व के राष्ट्रों में अधिक महत्व नहीं रखता । अनेक राजनीतिक भूगोलवेत्ताओं ने विस्तार के आधार पर राज्यों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है । ने विस्तार के आधार पर राज्यों की सात श्रेणियाँ व्यक्त की । बिल्जि ने विश्व के राज्यों को पाँच श्रेणियों में. विभक्त किया । पोण्ड्स ने राज्यों को विस्तार के आधार पर आठ श्रेणियों में विभक्त किया । सामान्यतया विश्व के राज्यों को विस्तार के आधार पर निम्नांकित श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है –

1 **विशालकाय राज्य** (Giant States) – इस श्रेणी में रूस, कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका. ब्राजील, चीन और आस्ट्रेलिया सम्मिलित किए जाते हैं जिनका क्षेत्रफल 50,00,000 वर्ग किमी. से अधिक है ।

2 **विशालतर राज्य** (Very Large States States) – इसमें 12,50,000 से 50,00,000 वर्ग किमी. क्षेत्रीय विस्तार वाले राज्य सम्मिलित किए जाते हैं । इसमें भारत, कांगो, मैक्सिको, अर्जेन्टाइना, ईरान, सूडान, कजाकिस्तान आदि देश सम्मिलित हैं ।

3 **विशाल राज्य** (Large Large States) – इसमें 2,50,000 से 12,50,000 वर्ग किमी. क्षेत्रफल'वाले राज्य सम्मिलित किए जाते है । इसमें प्रमुख राज्य मिश्र, नाइजीरिया, दक्षिणी अफ्रीका, बोलिविया, जापान, इराक आदि अनेक राज्य हैं ।

4 **मध्याकार राज्य** (Medium States) – इसमें मलेशिया, उतरी वियतनाम, दक्षिणी वियतनाम, पश्चिमी जर्मनी, पूर्वी जर्मनी आदि राज्य जिनका क्षेत्रफल 60,000 से 2,50,000 वर्ग किमी. के मध्य हैं ।

5 **लघु राज्य** (Small State) – इसके अन्तर्गत 25,000 से 60,000 वर्ग किमी. क्षेत्र के राज्य सम्मिलित हैं । इसमें हालैण्ड, बेल्जियम, स्विट्जरलैण्ड. अल्बानिया आदि राज्य सम्मिलित किए जाते हैं ।

6 **लघुत्तर राज्य** (Very Small States) – इस श्रेणी में 2,500 से 25,000 वर्ग किमी. क्षेत्रीय विस्तार वाले देश, जैसे– साईप्रस इजराइल, लग्जेमबर्ग, जैमेका आदि राज्य सम्मिलित हैं ।

7 **अति लघु राज्य** (Miniature States) – ये राज्य अति अल्प क्षेत्रीय विस्तार वाले हैं । सबसे छोटा राज्य वैटेकन शहर 0.44. वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है । मोनाको का विस्तार 1.95 वर्ग किमी में तथा सानमैरीनो का 61 वर्ग किमी. में है। इस श्रेणी के अन्य राज्य मकाओं, नोरू बरमूण्डा, सान मेरिनों, मार्शलद्वीप ली स्टनस्टीन, मालद्वीप, अन्डोरा तथा बहरीन हैं ।

अत: स्पष्ट है कि विस्तार एक सापेक्षिक तथ्य है । किसी राज्य का अल्प विस्तार भी विकास में बाधक हो सकता है तथा अधिक विस्तार भार बन सकता है ।

किन्तु वृहत् आकार –रक्षात्मक दृष्टिकोण से लाभप्रद होता है, क्योंकि इससे राज्य की सुरक्षा में वृद्धि होती है । इसको राजनीतिक भूगोलवेता 'गहराई की सुरक्षा' (DefenceDefence in Depth) की संज्ञा देता है । यही विशाल आकार भार बन जाता है, यदि क्षेत्र मरूस्थल, दलदली, अनुपजाऊ, पर्वतीय हो । राज्य का विस्तार संसाधन, जीवन स्तर, तकनीकी स्तर, परिवहन के साधनों आदि के नियोजित एवं समन्वित स्वरूप पर निर्भर है ।

राज्य विस्तार से सम्बन्धित निम्नांकित तथ्य विचारणीय हैं, जिनका प्रभाव राज्य पर पड़ता

1 विस्तार राज्य की आर्थिक एवं राजनीतिक शक्ति को प्रभावित करता है ।

2 अधिक विस्तार वाले राज्य का प्रशासन अपेक्षाकृत कठिन होता है ।

3 राज्य विस्तार एवं जनसंख्या में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है । अधिक जनसंख्या एवं कम विस्तार राज्य के लिए भार स्वरूप होता है । दूसरी ओर अधिक विस्तार तथा कम जनसंख्या राज्य विकास में बाधक होती है ।

4 अधिक या कम विस्तार का प्रभाव राज्य के आन्तरिक स्वरूप विशेषकर प्रशासनिक विभागों पर पड़ता है ।

बोध प्रश्न - 1

1. तीन सागरीय स्थिति वाले दो देशों के नाम लिखिए । !,
2. महाद्वीपीय स्थिति वाले दो देश कौनसे है?!
3. वर्तमान में विश्व में स्थल आवृत देशों की संख्या क्या हैं?
4. विशालकाय (Giant) राज्यों का क्षेत्रफल कितना होता है एवं किन्हीं दो विशालकाय देशों के नाम बताइए?
5. विश्व के सबसे छोटे राज्य का नाम एवं क्षेत्रफल क्या है?

9.4 आकार (Shape)

राज्यों की स्थिति एवं विस्तार के पश्चात् आकार का अध्ययन किया जाता है। राज्य के आकार का प्रभाव सुरक्षा, प्रशासन एवं यातायात पर अत्यधिक पड़ता है । राज्यों के आकार की दृष्टि से आदर्श आकार वृताकार (Cricular Shape) को माना जाता है, जिसके मध्य में राजधानी स्थित होती है । किन्तु इस प्रकार की आदर्श दशा का सर्वथा अभाव होता है । राजनीतिक भूगोल में राज्यों के निम्न प्रकार के आकारों का वर्णन किया जाता है:

1 **लम्बाकार** (Elongated) – इसमें राज्य की लम्बाई, चौड़ाई की अपेक्षा बहुत अधिक होती है । सामान्यतया लम्बाकार आकृति में लम्बाई औसत चौड़ाई से छः गुनी अधिक होती है । चिली, नार्वे, स्वीडन, इटली, पनामा, गेम्बिया टोगो, मलावी आदि लम्बाकार आकृति वाले राज्य हैं । लम्बाकार आकृति में सबसे अधिक कठिनाई सीमा सुरक्षा की होती है । इनमें परिवहन के साधनों की अधिक आवश्यकता होती है तथा

आन्तरिक प्रशासन में भी कठिनाई आती है । इस प्रकार के आकार का विस्तार उतर–दक्षिण होने पर राज्य में अनेक जलवायु विभाग मिलते हैं, जिससे विविध कृषि उपजों का उत्पादन संभव हो सकता है । राज्य का विस्तार पूर्व–पश्चिम होने पर यह स्थिति नहीं होती है ।

2 **आयताकार अथवा वृताकार** (Rectangular or Cricular) – इस प्रकार के राज्यों में सीमा सुरक्षा एवं प्रशासन सुविधा होती है । यद्यपि पूर्णतया वृताकार राज्य विश्व मैं दृष्टिगत नहीं होते है किन्तु कुछ अंशों में आयताकार एवं वृत्ताकार स्वरूप दृष्टिगत हो जाते हैं, जैसे – यूरूग्वे, बेल्जियम पोलैण्ड, सूडान आदि ।

3 **संयुक्ताकार** (Compact Shape) – इसमें राज्य का आकार एक संयुक्त खण्ड के रूप में विस्तृत होता है । इस प्रकार के आकार में राज्य को अनेक लाभ होते हैं, जैसे–सीमाओं की लम्बाई कम होने से सुरक्षा में सुविधा रहती है, परिवहन के साधनों का समुचित उपयोग होता है तथा प्रशासन में सुविधा रहती है । इस प्रकार के देश हंगरी, रूमानिया, फ्रांस, इरान आदि हैं ।

4 **विस्फोटाकार** (Prorupt Shape) – इस प्रकार के आकार में राज्यों का संयुक्ताकार होते हुए भी एक भाग लम्बाकार रूप में निकला होता है । इस प्रकार के राज्य अनेक बार आन्तरिक कठिनाइयों में फेस जाते हैं । एशिया में म्यान्मार एवं थाइलैण्ड इसके उदाहरण है

5 **विच्छिन्नाकार** (Fragmented Shape) – राज्य का आकार जब संयुक्त रूप न रहकर अनेक खण्डों में विभक्त हो जाता तब उसे विच्छिन्नाकार कहते हैं । इण्डोनेशिया, जापान फिलीपाइन आदि देश इसके उदाहरण हैं । साथ ही राज्य के अनेक असम्बद्ध इकाइयों में विभक्त होने के कारण राष्ट्रीय एकता में भी बाधा उपस्थित होती है ।

6 **प्रकीर्णाकार** (Scattered Shape) – इसके अन्तर्गत वे राज्य सम्मिलित किए जाते हैं जिनके क्षेत्र विश्व के विभिन्न भागों में फैले होते हैं । ये क्षेत्र उपनिवेश भी हो सकते हैं । उदाहरण के लिए प्राचीन ब्रिटिश साम्राज्य जिसकी इकाईयाँ देश में विस्तृत थीं ।

7 **भेदनाकार** (Pertorated Shape) – इसमें एक राज्य में दूसरे राज्य का छोटा सा क्षेत्र स्थित होता है । उस क्षेत्र तक पहुँचने के लिए राज्य को पार करना पड़ता है, जैसे दक्षिण अफ्रीका में "बसूतोलैण्ड" की स्थित है ।

8 **मिश्रिताकार** (Mixed Shape) – इसके अन्तर्गत वे राज्य आते हैं जो उपर्युक्त वर्णित आकारों में दो की विशेषता रखते हैं । उदाहरण– इटली एवं चिली ।

उपुर्यक्त वर्णित राज्यों के प्रमुख प्रकारों के अतिरिक्त कुछ विशिष्ट आकार भी दृष्टिगत होते हैं, जैसे– अन्त: क्षेत्र (Enclave), बहि:क्षेत्र (Exclave), ग्लेसिस (Glacis), पुल पदाधार (Bridgehead) आदि । अन्त:क्षेत्र वह क्षेत्र होता है जो चारों ओर से दूसरे राज्य से घिरा हो, जैसे वेटिकन नगर एवं सानमारिनो राज्य इटली के

क्षेत्र में हैं । लगभग यहीं परिस्थिति बहि:क्षेत्र की होती है जो राज्य से घिर जाता है, जैसे–लिलिनिया स्पेन के लिए बहि:क्षेत्र है ।

कभी–कभी जब एक राज्य अपने आकार में वृद्धि इस प्रकार करता है कि वह पर्वतीय सीमा के पार हो जाता है तो उसे ग्लेसिस (Glacis) कहते हैं । स्विट्जरलैण्ड के पास ऐसे दो हैं – एक जूरा पर्वत के निकट फ्रान्स में तथा आल्प्स के निकट इटली में । यदि राज्य नदी के पार क्षेत्रीय विस्तार कर लेता है तो उस आकार को 'पुल पदाधार (Bridgehead) कहते हैं । हालैण्ड का एक पुलपदाधार क्यूज नदी के पारमास्ट्रिश के निकट है ।

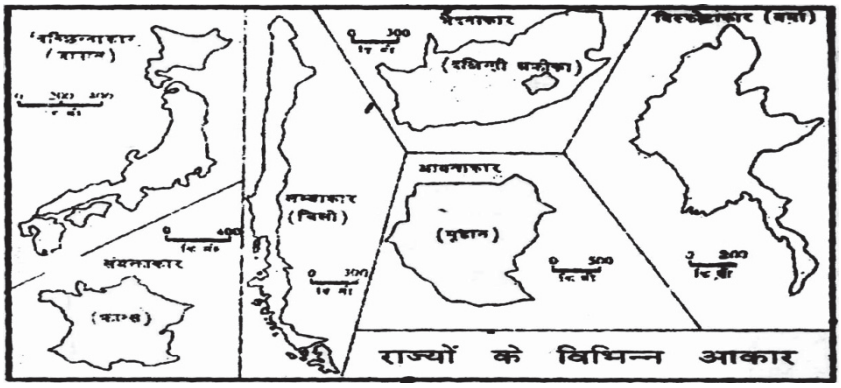

मानचित्र– 9.4 **राज्यों के विभिन्न आकार**

9.5 जलवायु (Climate)

मानव जीवन को प्रभावित करने वाले प्रमुख प्राकृतिक तत्वों में जलवायु भी एक है । जलवायु का प्रभाव मानव जीवन के विविध रूपों में अर्थात् भोजन, वस्त्र, आवास, आर्थिक क्रियाओं एवं विविध सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ–साथ राज्य की राजनीतिक अवस्था विशेषकर शक्ति पर पड़ता है । यह सत्य है कि शीतोष्ण प्रदेश में ही विकासमान एवं शक्तिशाली राज्य रहे हैं । राज्य की राजनीतिक शक्ति अथवा स्वरूप के विकास में जलवायु के तीन तत्व अर्थात् शीत उष्णता एवं शुष्कता सदैव बाधक रहे हैं । अत: इनका विवेचन राजनीतिक शक्ति के संदर्भ में आवश्यक है ।

शीत (Cold)

ध्रुवीय प्रदेश अथवा उच्च पर्वतीय प्रदेश अति शीत वाले प्रदेश हैं जहाँ वर्षभर हिमाच्छादन रहता है । अत: इन क्षेत्रों में किसी भी प्रकार की फसल का उत्पादन संभव नहीं होता । कहीं–कहीं इन क्षेत्रों में खनिज उपलब्ध हो जाते हैं, जैसे उतरी स्वीडन में लोहा या अलास्का में सोना आदि अथवा समुद्री जीव एवं मछलियाँ उपलब्ध हो जाती हैं। ये साधन इस प्रकार के नहीं हैं कि आर्थिक . व्यवस्था विकसित हो सके । ये क्षेत्र परिवहन के साधनों की दृष्टि से भी अनुपयोगी हैं । अत: शीत प्रदेशों में राजनीतिक विकास अवरूद्ध हो जाता है ।

उष्णता (Heat)

उष्णता भी राजनीतिक विकास में बाधा उपस्थित करती है । इसकी दो दशाएँ सामान्यतया होती हैं । प्रथम– उष्णता के साथ शुष्कता का न होना अर्थात् वर्ष भर समान नम मौसम होना एवं द्वितीय– पर्याप्त उष्णता एवं नमी का वर्ष भर न होकर एक शुष्क काल होना । प्रथम श्रेणी में भूमध्यरेखीय क्षेत्र सम्मिलित किए जाते हैं, जहाँ वर्ष भर उच्च तापमान तथा प्रतिदिन सायं के समय वर्षा होने से दलदली क्षेत्र, घनी वनस्पति एवं अनेक बीमारियों से मानव क्षमता समाप्त हो जाती है । द्वितीय श्रेणी में जलवायु में परिवर्तन होता रहता है अर्थात् नम जलवायु के साथ एक शुष्क काल भी होता है । इस प्रकार के क्षेत्र मानसून प्रदेश, विशेषकर भारत, पाकिस्तान बांग्लादेश, श्रीलंका एवं दक्षिणी–पूर्वी एशिया के देश हैं । ये अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्र हैं, जहाँ अनेक फसलों जैसे– चावल, गन्ना चाय, काफी, रबर, कपास, जूट आदि का उत्पादन भी प्रचुर मात्रा में होता है ।

शुष्कता (Aridity)

किसी क्षेत्र की शुष्कता– भी राजनीतिक जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है । जल मानव बसाव एवं कृषि 'कार्यो को प्रभावित करता है । अत: जल के अभाव में ये क्षेत्र उन्नत नहीं हो पाते हैं । जल प्राप्त होने पर शुष्क क्षेत्रों में भी शक्तिशाली तथा उन्नत राज्यों का विकास हो जाता है । नील नदी घाटी एवं सिन्धु घाटी में सभ्यताओं का विकास इसके उदाहरण हैं । इसके अतिरिक्त मरूस्थली क्षेत्रों में भी खनिज उपलब्ध हो जाते हैं तो वहाँ भी मानव बसाव हो जाता है जिसमें उनका महत्व बढ़ जाता है – । पश्चिमी एशिया के देशों को पेट्रोलियम की उपलब्धि ने विश्व राजनीति में महत्वपूर्ण बना दिया है ।

उपयुक्त जलवायु (Suitable Climate)

पर्याप्त आर्द्रता एवं मध्यम तापमान अर्थात् शीतोष्ण जलवायु राज्य के सार्वभौमिक विकास के लिए उपयुक्त समझी जाती है । इस प्रकार की जलवायु के क्षेत्र मध्य अक्षांशों में एव निम्न अक्षांशों के उच्च क्षेत्रों में विस्तृत होते हैं । मध्य अक्षांशीय प्रदेशों में उतरी अमेरिका, यूरोप के अधिकांश प्रदेश, दूर पूर्व के देश जापान आदि हैं । दक्षिणी महाद्वीपों में अर्जेन्टाइना, चिली, न्यूज़ीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका आदि देश स्थित हैं । निम्न अक्षांशों के उच्च प्रदेशों में मध्य अमेरिका के उच्च क्षेत्र तथा पूर्वी अफ्रीका के उच्च क्षेत्र सम्मिलित किए जाते हैं । अत: राजनीतिक शक्ति को नियंत्रित करने वाले अनेक भौगोलिक तत्वों में से जलवायु भी एक है ।

जलवायु का प्रभाव सम्पूर्ण राज्य के अतिरिक्त आन्तरिक प्रशासन पर भी पड़ता है । सामान्यतया राज्य की एकता के लिए समजलवायु आदर्श मानी जाती है । इससे राजनीतिक एकता का विकास होता है । दूसरी ओर जलवायु की भिन्नता कभी– कभी राजनीतिक विच्छिन्नता को जन्म देती है । इसी प्रकार युद्ध के समय एवं स्थान पर भी जलवायु का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है ।

बोध प्रशन - 2

1. राज्यों के आकार कि दृष्टि से आदर्श आकार किसे माना जाता है ?
2. किन्ही दो लम्बाकार राज्यों के नाम क्या है ?
3. विश्व के दो लगभग वृताकार राज्यों के नाम बताइए ।
4. किसी राज्य कि राजनीतिक शक्ति को प्रभावित करने वाले जलवायु के तीन तत्व कौन से है ?
5. किसी राज्य के सार्वभौमिक विकास के लिए उपयुक्त जलवायु कौन सी होती है ?

9.6 धरातल (Relief)

किसी प्रदेश का धरातल वहाँ के पर्वत, पठार, मैदान आदि विविध भू–आकारों से निर्मित होता है । धरातल एक ओर राज्य के आर्थिक और सांस्कृतिक स्वरूप को प्रभावित करता है तो दूसरी ओर यह राज्य की सीमा निर्धारित करता है ।

धरातल का आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप पर प्रभाव

समतल मैदानी भाग आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए उपयुक्त धरातल प्रस्तुत करते हैं । अत: राजनीतिक विकास के लिए भी समतल क्षेत्र उपयुक्त होते हैं । मैदानी प्रदेशों में ही विश्व की अधिकांश जनसंख्या निवास करती है । इसी कारण राजनीतिक गतिविधियों के केन्द्र भी यही प्रदेश होते हैं । समतल प्रदेशों में परिवहन के साधनों का विकास सरलता से होता है । इसके अतिरिक्त कृषि एवं अन्य आर्थिक क्रियाओं का विकास भी मैदानी क्षेत्रों में ही अधिक होता है । किन्तु युद्ध के समय समतल धरातल असुविधा कर होता है, क्योंकि अवरोध न होने के कारण इन समतल धरातलीय भागों में आक्रमणकारी सरलता से आगे बढ़ता जाता है ।

पर्वतीय क्षेत्र राज्य को सुरक्षा प्रदान करते है । अनेक राज्यों का विकास पर्वतीय क्षेत्रों से आरम्भ होकर मैदानी भागों में विस्तार होता है । दक्षिणी अमेरिका के वेनेजुएला, कोलम्बिया, इक्वेडोर एवं एशिया के ईरान, टर्की, इथोपिया आदि राज्यों का विकास इसी प्रकार हुआ । आक्रमण के समय पर्वतीय क्षेत्र आश्रय स्थल का कार्य करते हैं, साथ ही आक्रमण की गति एवं क्षमता को कम करते हैं । पर्वतीय क्षेत्र परिवहन तथा संचार के साधनों, कृषि एवं अन्य क्रियाओं के विकास में बाधक होते हैं । स्विट्जरलैण्ड, नेपाल, भूटान आदि पर्वतीय राज्यों के उदाहरण हैं ।

धरातल का सीमाओं की स्थिति पर प्रभाव

विश्व में अनेक देशों की सीमाओं का निर्धारण धरातलीय रूपों द्वारा हुआ है । समतल क्षेत्र की सीमा अपेक्षाकृत कम प्रभावशाली होती है । मैदानी क्षेत्रों में नदियाँ, झील अथवा वनों के प्रदेश –सीमा के रूप में उपयोग में लाए जाते हैं किन्तु ये अधिक प्रभावशाली नही होते हैं । मैदानी प्रदेशों की सीमाएँ युद्ध के समय अधिक भेदनीय होती हैं । उच्च पर्वतीय प्रदेश अवरोधक के रूप में प्राकृतिक सीमा बनाते हैं । यद्यपि वर्तमान हवाई युग में पर्वतों का अवरोधक स्वरूप अधिक महत्व नहीं रखता है, किन्तु ये मैदानों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली होते हैं ।

अत: स्पष्ट है कि धरातल राज्य के राजनीतिक स्वरूप को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है ।

9.7 सागर एवं महासागर (Sea and Oceans)

विश्व के केवल 20 राज्य ऐसे हैं जिनकी सम्पूर्ण सीमा स्थलीय है अन्यथा शेष सभी राज्यों का सीमित या पूर्ण रूप से सागर अथवा महासागर से सम्बन्ध है । पूर्णतया जलीय सीमाओं से घिरे हुए देशों में जापान, न्यूज़ीलैण्ड, ग्रेट ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया आदि प्रमुख हैं । दूसरी ओर इराक, जार्डन आदि अनेक राज्य कुछ मील लम्बी तटीय सीमा रखते हैं । राज्यों के लिए सागर एवं महासागर के तटीय क्षेत्रों का अत्यधिक महत्व होता है । ये न केवल जल परिवहन के साधन मात्र हैं अपितु इनकी बहुमुखी उपयोगिता है । राज्य के विकास में इनका महत्वपूर्ण स्थान होता है । वर्तमान काल में महासागरों की उपयोगिता निम्नलिखित तथ्यों से स्पष्ट है:

- मछली के रूप में सागर एवं महासागर खाद्य पदार्थ का विशाल भण्डार प्रदान करते हैं ।
- सागर एवं महासागर राज्यों को सुरक्षा प्रदान करते हैं । स्थलीय सीमा की तुलना में सागरीय सीमा अधिक सुरक्षित मानी जाती है ।
- विश्व के व्यापार में सागर एवं महासागरों की परिवहन के साधन के रूप में अत्यधिक उपयोगिता है ।
- महासागरों के तल, विशेषकर तटीय क्षेत्रों में उपलब्ध अनेक खनिजों के कारण भी इनका अत्यधिक महत्व है ।

9.7.1 **क्षेत्रीय सागर परिकल्पना** (Concept of Territorial Sea.)

सागर तट पर स्वामित्व एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है जिसके फलस्वरूप 'क्षेत्रीय सागर परिकल्पना का विकास हुआ । क्षेत्रीय जल के सम्बन्ध में सबसे अधिक महत्वपूर्ण विचार क्रोनलियस वान बाइकेरशोक ने प्रस्तुत किए । उनके अनुसार तटवर्ती सागरों पर एक तोप के गोले की मार तक का अधिकार युक्तिसंगत है तथा इस पर उसी का अधिकार होना चाहिए जिसका तट पर अधिकार है । क्षेत्रीय जल के अधिकार के सम्बन्ध में विचार परिवर्तित रहे हैं । उच्च सागर' (High Sea) की पूर्ण स्वतंत्रता सभी ने सदैव स्वीकार की । तोप के गोले की दूरी में भी मतभेद हुए, क्योंकि गोले की दूरी तोप के आकार एवं चलाने के स्थान पर निर्भर करती है । इसके बाद 3 मील की दूरी निर्धारित की गई । यद्यपि तोप के गोले की दूरी का सिद्धान्त वर्तमान में भी मान्य है किन्तु सभी देशों के क्षेत्रीय सागरीय जल पर नियंत्रण की सीमा समान न होकर भिन्न–भिन्न है । 3 मील की सीमा संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी के अतिरिक्त अनेक देशों ने स्वीकार की है । 3 मील से अधिक क्षेत्रीय जल की सीमा वाले राज्य निम्न तालिका में दिए गए हैं:

क्षेत्रीय सागर सीमा

क्षेत्रीय सागर सीमा	**देश**
6 किमी	नार्वे, स्वीडन, फिनलैण्ड
8 किमी	कम्बोडिया
10 किमी.	स्पेन, इटली, यूरूग्वे लेबनान, कोलम्बिया, श्रीलंका, इजराइल, पुर्तगाल, ब्राजील, केमरून, सेनेगल. सोमालिया, द.अफ्रीका गणतंत्र, टर्की
14 किमी	मेक्सिको
16 किमी.	यूगोस्लोविया
19 किमी.	अल्बानिया, अल्जीरिया बूल्गारिया, साइप्रस, इथोपिया, घाना,ग्वाटेमाला, भारत, इण्डोनेशिया, इरान, ईराक, लिबिया, मेडागासकर, नाइजीरिया, मिश्र, वेनेजुएला, पाकिस्तान, रूमानिया, सउदी अरब, सिएरालिओन , सोवियत संघ ।

इसके अतिरिक्त चीली की 50 किमी. तथा इक्वाडोर, एल्सेल्वेडोर तथा पनामा की 220 किमी. क्षेत्रीय जल सीमा है ।

9.7.2 **आर्थिक क्षेत्र सम्बन्धी परिकल्पना** (Concept of Economic Zone)

प्रत्येक देश की सागरीय जल सीमा अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों के माध्यम से निर्धारित है । इससे सम्बन्धित महत्वपूर्ण विचार यह है कि कोई देश किस सीमा तक सागरीय क्षेत्र का आर्थिक उपयोग कर सकता है । सागर की सीमा 3 नॉटीकल मील या निर्धारित दूरी पर सम्बन्धित देश का पूर्ण नियंत्रण है, किन्तु सागरी क्षेत्र के आर्थिक उपयोग विशेषकर मछली पकड़ने के क्षेत्र के निर्धारण में अभी भी एकरूपता का अभाव है । इसके लिए तटीय देशों ने 200 मील की सीमा के लिए प्रस्ताव किया है । किन्तु इस पर विश्व के सभी देश एकमत नहीं है । जैसे–जैसे सागरीय स्त्रोतों के सम्बन्ध में ज्ञान बढ़ता जा रहा है, इनकी आर्थिक महता में भी वृदि हो रही है । सागरीय सीमा जीवों पर लागू नहीं की जा सकती जिनकी प्रकृति स्थानान्तरित होने की है । इसके अतिरिक्त राज्यों के तकनीकी स्तर में भिन्नता होने से सभी देश निश्चित दूरी तक सागरीय जल का उपयोग नहीं कर सकते, फलस्वरूप विकसित तकनीकी वाले देश अविकसित देशों के स्त्रोतों का अनियमित शोषण न करें । अत: इस सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय एक मत होना आवश्यक है, अन्यथा इसका विवाद अनेक समस्याओं को जन्म देगा ।

बोध प्रशन–3

1. धरातल राज्य के कौन से तत्वो को प्रभावित करता है ?
2. किन्ही दो पर्वतीय राज्यों के नाम बताइए ?

3. विश्व के कितने राज्यों की सीमा पूर्णत: स्थलीय है ?
4. पूर्णतया जलीय सीमाओं से घिरे दो देशों के नाम लिखिए
5. चिली राज्यों को क्षेत्रीय सागर सीमा क्या है ?

9.8 सारांश (Summary)

किसी भी प्रदेश के प्राकृतिक तत्वों का राज्य के एवं शक्ति पर एकाकी एवं सामूहिक प्रभाव पड़ता है । प्राकृतिक तत्वों के अन्तर्गत मुख्यत:, क्षेत्रीय विस्तार, आकार जलवायु, धरातल, सागर एवं महासागर आदि का अध्ययन किया जाता है । स्थिति एक महत्वपूर्ण भौगोलिक तथ्य है जो राज्य को निरन्तर प्रभावित करती है । किन्तु समय के साथ स्थिति के सापेक्षिक अथवा राजनीतिक महत्व में परिवर्तन होता रहता है । स्थिति को अक्षांश एवं देशान्तर रेखाओं के सन्दर्भ में, जल एवं स्थल के सन्दर्भ में एवं निकटवर्ती देशों के सन्दर्भ में व्यक्त किया जाता है । किसी राज्य के क्षेत्रीय विस्तार का भी उसके विकास एवं शक्ति पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है । विशालकाय राज्यों का क्षेत्रफल 50,00,000 वर्ग किमी. से अधिक, विशालतर राज्यों का 12,50,000से 50,00,000 वर्ग किमी. तक, विशाल राज्यों का 250,000 से 12,50,000 वर्ग किमी. तक, लघु राज्यों का 25,000से 60,000 वर्ग किमी. तक होता है । विस्तार एक सापेक्षिक तथ्य है । राज्यों के आकार का प्रभाव सुरक्षा, प्रशासन एवं यातायात पर अत्यधिक पड़ता हे । 'वृताकार को राज्य का आदर्श आकार माना जाता है । विभिन्न प्रकार के आकारों में लम्बाकार, आयताकार अथवा वृताकार, संयुक्ताकार विस्फोटाकार, विच्छिन्नाकार प्रकीर्णाकार भेदनाकार एवं मिश्रिताकार आदि होते हैं ।

राज्य की राजनीतिक शक्ति के विकास में जलवायु के तीन तत्व शीत, उष्णता एवं शुष्कता सदैव बाधक रहे है । शीतोष्ण जलवायु राज्य के सार्वभौमिक विकास के लिए उपयुक्त समझी जाती है । इसमें उतरी अमेरिका, यूरोप के अधिकांश देश, जापान, अर्जेन्टाइना, चिली, न्यूजीलैण्ड आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका आदि देश आते है । धरातल राज्य के आर्थिक और सांस्कृतिक स्वरूप एवं राज्य की सीमा को निर्धारित करता है । स्विट्जरलैण्ड, नेपाल, भूटान आदि पर्वतीय राज्यों के उदाहरण हैं ।

विश्व के सम्पूर्ण स्थलीय सीमा वाले राज्यों की संख्या केवल 20 है । 'क्षेत्रीय सागर परिकल्पना' सागर तट पर स्वामित्व से सम्बन्धित है । 'आर्थिक क्षेत्र सम्बन्धी परिकल्पना सागरीय क्षेत्र के आर्थिक उपयोग से सम्बन्धित है ।

9.9 शब्दावली (Glossary)

स्थिति : यह किसी स्थान अथवा राज्य की अंक्षाश एवं देशान्तर रेखाओं जल एवं स्थल अथवा निकटवर्ती देशों के सन्दर्भ में व्यक्त की जाती है।
सामुद्रिक स्थिति : वे राज्य जिनका सागरीय तट से कोई सम्बन्ध नहीं है ।
महाद्वीपीय स्थिति : ऐसे राज्य जिनका सम्बन्ध समुद्र से है ।

अन्तस्थ राज्य	:	दो बड़े देशों के मध्य स्थित छोटी राजनीतिक इकाई को कहते है
सामरिक स्थिति	:	इस प्रकार की स्थिति का सम्बन्ध राज्य की सुरक्षा से होता है । ये वे स्थल होते हैं जिनको आधार मानकर आक्रमण किया जाता है ।
अन्त: क्षेत्र	:	वह क्षेत्र जो चारों ओर से दूसरे राज्य से घिरा होता है ।
ग्लेसिस.	:	जब एक राज्य अपने आकार में इस प्रकार करता है कि वह पर्वतीय सीमा के पार हो जाता है तो उसे 'ग्लेसिस' कहते हैं ।
पुल पदाधार	:	यदि राज्य नदी के पार क्षेत्रीय विस्तार कर लेता है तो उस आकार को 'पुल पदाधार कहते हैं ।

9.10 संदर्भ ग्रन्थ (References)

1	Blij,H.D.de	:	Systematic Political Geography,John Wiley,1973
2	Dikshit ,R.D.	:	Political Geography ,McGraw Hill,2000
3	Pounds,N.J.G.	:	Political Geography McGraw Hill 1963
4	Weigert,W.H.& Other	:	Principales of Political Geography Appleton Century,Cryts Inc.New Yark,1975.
5	सक्सेना एच.एम.	:	राजनीतिक भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, 2008

9.11 बोध प्रश्नों के उतर

बोध प्रश्न–1

1 संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा

2 नेपाल, अफगानिस्तान

3 26

4 50,00,000 वर्ग किमी. से अधिक, रूस एवं कनाडा

5 वेटिकन शहर, 0.44 वर्ग किमी.

बोध प्रश्न – 2

1 वृताकार को

2 चिली, नार्वे

3 यूरूग्वे, बेल्जियम

4 शीत, उष्णता, शुष्कता

5 शीतोष्ण जलवायु

बोध प्रश्न – 3

1 राज्य के आर्थिक और सांस्कृतिक स्वरूप एवं राज्य की सीमा

2 नेपाल, भूटान

3 20 राज्य

4 जापान, न्यूजीलैण्ड

5 किमी.

9.12 अभ्यासार्थ प्रशन

1 किसी राज्य को प्रभावित करने वाले प्राकृतिक तत्वों पर एक भौगोलिक लेख लिखिए ।

2 राज्य के लिए स्थिति, आकार और विस्तार के महत्व की विवेचना कीजिए ।

3 जलवायु एवं धरातल का राजनीतिक भूगोल के अध्ययन में महत्व स्पष्ट कीजिए ।

4 क्षेत्रीय सागर परिकल्पना एवं आर्थिक क्षेत्र सम्बन्धी परिकल्पना की विवेचना कीजिए ।